

# हिंदी साहित्य एवं मानवीय मूल्य

---

संपादक

डॉ. गणेशचंद्र शिंदे  
डॉ. संदीप एस. पाईकराव  
डॉ. साईनाथ ग. शाहू

भाईचारे से भरे क्षेत्र में बदलना है। अतः समाज में मानवीय मूल्यों के वीज अंकुरित करने की पुनश्च आवश्यकता निर्माण हो गई है। विशेष रूप से युवाओं में सजगता निर्माण करना अनिवार्य बनता जा रहा है। एक स्वस्थ समाज तथा स्वस्थ जीवन जीने के लिए जीवन मूल्यों की नितांत आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राचीन काल से लेकर आज तक निर्माण किया गया साहित्य तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं के द्वारा समाज में मानवीय मूल्यों का निरंतर पोषण किया गया है।

मूल्य विघटन वर्तमान समय की सबसे बड़ी ब्रासदी है। इस ब्रासदी से उबरने के लिए मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एकमात्र उपाय है। प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण इस दिशा में एक लघु प्रयास है। प्रस्तुत पुस्तक सुविज्ञ प्रयुद्ध तथा जिज्ञासु पाठकों को समर्पित है इस आशा सहित कि मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में हमारे इस लघु प्रयास की यात्रा में हमसफर बनें। हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस पुस्तक के निर्माण में विन्न-विन्न राज्यों के विद्वानों ने अपनी भावना तथा विचारों को प्रकट कर योगदान दिया है। इस ग्रंथ की खास बात यह है कि योगदान कर्ताओं द्वारा शीर्षक पर नवजायामी दृष्टिकोण से चर्चा की गई है। हम इस ग्रंथ के समस्त लेखकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनके परिश्रम एवं ज्ञान राशि के फलस्वरूप प्रस्तुत ग्रंथ साकार हो सका।

इस ग्रंथ के निर्माण में हमारे प्रेरणा स्रोत भूतपूर्व मुख्यमंत्री महाराष्ट्र राज्य तथा श्री शारदा भवन एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष माननीय श्री अशोकराव जी चव्हाण, उपाध्यक्ष सी. अमिताताई चव्हाण, भूतपूर्व शिक्षा राज्य मंत्री तथा शारदा भवन एजुकेशन सोसाइटी के माननीय सचिव आदरणीय डी. पी. सावंत जी, सह सचिव आदरणीय उदयरावजी निवाळकर, कोपाध्यक्ष आदरणीय डॉ. रायसाहेब शेंदारकर तथा कार्यकारिणी सदस्य आदरणीय नरेंद्र दादा चव्हाण आदि के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि परिकल्पना प्रकाशन नई दिल्ली ने हमारे चिंतन को सामने लाया है। इसके लिए प्रकाशक डॉ. शिवानंद तिवारी जी का धन्यवाद जिनके परिश्रम से ही इस ग्रंथ का निर्माण संभव हो पाया। साथ ही हम अपने उन समस्त शुभचिंतकों एवं सहयोगियों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है।

—संपादक

## अनुक्रम

संपादकीय	5
1. साहित्य और मानवीय मूल्य —प्रो. डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार	15
2. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में निहित मानव-मूल्य —डॉ. परचिंदरकौर महाजन कोल्हापूरे	19
3. मटुला सिन्हा के कथा साहित्य में मानव मूल्य —डॉ. मनीषा शर्मा	24
4. साहित्य एवं मानवीय मूल्य —डॉ. सुभाष क्षीरसागर	30
5. मूल्य, जीवन मूल्य और साहित्य —प्रा. डॉ. मनोहर गंगाधरराव चपळे	34
6. साहित्य में मानवीय मूल्य —डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद	38
7. हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्य —डॉ. शेखर चुंगरवार	45
8. मानवीय मूल्य नैतिकता : उत्पत्ति और विकास —डॉ. संतरा चौहान	51
9. साहित्य एवं मानवीय मूल्य —डॉ. किशोरसिंह सोलंकी	54
10. पत्रकारिता और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा —डॉ. बेंद्रे बसवेश्वर नागोराव	57
11. भक्ति साहित्य तथा मानवीय मूल्य —डॉ. अमर आनंद आलदे	61
12. भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य —अर्जुन कुमार	68
13. आंबेडकरवादी कविताओं में सवैधानिक मानवीय मूल्य —डॉ. रगडे परसराम रामजी	69
14. समकालीन कवि धूमिल के काव्य में मानवीय मूल्य —डॉ. मुकुंद कवडे	75

79. उदय प्रकाश की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य —डॉ. प्रकाश भगवानराय शिंदे	366
80. आधुनिक कविता में मूल्यबोध —डॉ. प्रणिता लक्ष्मणराय पाटील	371
81. प्रेमचंद के साहित्य में मानवीय मूल्य —डॉ. दीपक विनायक पवार	376
82. नन्तू भंडारी के उपन्यासों में मानवीय मूल्य —डॉ. शरद शेषराव कदम	381
83. गांधीजी की पुस्तक 'हिंद स्वराज' में मानवीय मूल्य —डॉ. रजिया शहेनाज शेख अबुल्ला	388
84. साहित्य में मानवीय मूल्यबोध —प्रो. डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे	393
85. भारतीय संविधान तथा मूल्य —डॉ. प्रतिभा आनंदराव जावळे	398
86. संविधान तथा मानवीय मूल्य —प्रो. वी.डी.कापावार/डॉ. माधव शंकर	403
87. मध्यकालीन संत काव्य में मानवीय मूल्य —प्रो. डॉ. भास्करराव संजय गणपती	405
88. गीतांजलि श्री के उपन्यासों में चित्रित नारी मूल्य —प्रो. विद्या बाबू राव छाडे	409
89. हिंदी कहानियों में मानवीय मूल्य —डॉ. छंदारे धंदू	412
90. किन्नर-सौवन पर आधारित कहानियों में मानवीय मूल्य —उषादेन के. परमार	415
91. भक्ति साहित्य तथा मानवीय मूल्य —डॉ. रत्नमाला धारबा धुळे	420
92. कव्यमूल्य और भूमंडलीकरण के संदर्भ में गांधी —डॉ. सचिन मदन जाधव	424
93. कबीरदास के साहित्य में मानवीय मूल्य —डॉ. प्रमोद जलाल खान	428
94. रामरायण की संकल्पना और मानवीय मूल्य —प्रो. डॉ. संजिता सोमटे	433

95. समकालीन हिंदी कविता और मूल्य बोध की परिकल्पना —डॉ. सुमित पी.वी.	438
96. समकालीन वाक्साहित्य में मानवीय मूल्य —प्रो. वात्सेय्य राम	442
97. स्कन्दगुप्त नाटक में सामाजिक चेतना —प्रो. डॉ. पी. एम. भुमरे	451
98. मानवीय समता का विधापक संत साहित्य —प्रो. डॉ. राहुल पुत्रनिकराव वाघमारे	458
99. हिंदी और मगरी दलित कविता में मानवीय मूल्य —प्रो. डॉ. प्रकाश महाशिव सुवंकशी	461
100. मानवीय मूल्यों का प्रतीक : मरु-कंसरी दुर्गादास राठोड —डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण/डॉ. साईनाथ ग. शाहू	464
101. कवोर के काव्य में नैतिक मूल्य —प्रो.डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	469
102. संत कवोर और तुकाराम के साहित्य में मानवीय मूल्य —डॉ. नवनाथ गाडगेकर	471
103. संत भगत की कहानियों में मानवीय मूल्य —डॉ. मर्गना ममार	479
104. समकालीन उपन्यासों में मानव-मूल्य —डॉ. राजेंद्र कुमार	483
105. मानवीय मूल्यों के संचालक : संत रहीम —प्रो. डॉ. कदम भगवान रामकिशन	487
106. 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में मानव मूल्य —डॉ. संध्या टाकर	491
107. सूर के काव्य में जीवन मूल्य —डॉ. यशंत पुजाजी गाडे	495
108. भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य —प्रो. सुपर्णा गंगाधर संतुळी	501
109. संत कवोर के काव्य में मानवीय मूल्य —डॉ. विनोद कुमार	505
110. जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकियाँ —डॉ. मृजितामिह. शि. परिहार	509

## भारतीय संविधान तथा मूल्य

डॉ. प्रतिभा आनंदराय जावड़े

हिंदी विभाग

तुलजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

भारत एक धार्मिक सांस्कृतिक और परंपरागत देश है स इस देश में अलग जाती धर्म वंश के लोग रहते हैं। विविधताओं में एकता के सूत्र में इसे बांधा है। यह सिर्फ संविधान के कारण संभव हो गया है। राष्ट्रनिर्माण के अग्रदूत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने हमारी भूमि के लिए संविधान में वास्तविक मूल्य और महत्व को चित्रित किया है। यह वह संरचना है, जिस पर एक राष्ट्र खड़ा होता है और बढ़ता है। यह वह ढांचा है जो लोगों और सरकार को एक साथ बांधता है। डॉ. आंबेडकर के विचार से, "संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है, यह जीवन का वाहन है और इसकी भावना हमेशा युग की भावना है।" मानवीय अधिकार का दस्तावेज ही संविधान है। 'लोगों' को भारतीय संविधान के मूल रूप में रखा गया है, क्योंकि प्रस्तावना ही, "हम भारत के लोगों से शुरू होती है।" भारत का संविधान एक आदर्श संविधान से पहचाना जाता है। हमारे इस संविधान में निहित कुछ मूल्य हैं जो इसे वास्तव में अद्वितीय बनाते हैं। आज संविधान में निहित मूल्यों को समझना और उनका सम्मान करना आवश्यक है।

प्रत्येक देश का संविधान देश को संचालित करने के लिए मूल्य आधारित व्यवस्था बनाता है। भारतीय संविधान की विशेषता का अध्ययन करने के बाद अध्ययन क्रम में मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। कौन से मौलिक अधिकार और कितने मौलिक कर्तव्य है यह जानना भी जरूरी है। भारतीय संविधान द्वारा मूल अधिकारों की व्यवस्था करने के पीछे संविधान निर्माताओं की धारणा थी कि स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में भारतवासी अपना जीवनयापन कर सकें। इससे भी महत्वपूर्ण बात है कि मूलअधिकार के उल्लंघन होने पर अनुच्छेद 32 के तहत सर्वोच्च न्यायालय में जाना भी मूल अधिकार है। इसीलिए डॉ. आंबेडकर ने इस अधिकार को संविधान की आत्मा कहा है।

संविधान द्वारा मूल रूप से सात मूल अधिकार प्रदान किए गए हैं। समानता, अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धर्म संस्कृति एवं शिक्षा की स्वतंत्रता का अधिकार, संपत्ति का अधिकार तथा संवैधानिक उपचारों का अधिकार, "अधिकार सामाजिक जीवन की परिस्थितियाँ हैं जिनके अभाव में कोई

व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता।" मनुष्य के जीवनयापन करते समय मूल्योंका समझना भी जरूरी है।

मूल्य समाज द्वारा स्वीकृति होते हैं, मूल्य शब्द से तात्पर्य नि: शैलिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से हैं जिनके द्वारा मनुष्य के अस्तित्व उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है व मूल्यों का व्यक्ति आचरण, व्यक्तित्व तथा भावों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। मूल्य वह है जो मानव इच्छा को पूरा करते हैं। मां का जन्म ही संविधान की विशेषताएं हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तुति "सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए त-सब में व्यक्ति गरिमा और राष्ट्र की एकता अखंडता बंधुता।" आदि मूल्यों के प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। मनुष्य जीवनयापन करते समय इन मूल्यों के स-व्यवहार और कर्तव्य में दक्ष रहना ही देश के लिए हितकारक होगा संविधान जीन कैसे सिखाता है। इसकी प्रस्तावना की सबसे महत्वपूर्ण बात देश के समस्त नागरिकों के लिए न्याय एव समानता सुनिश्चित किए जाने का आश्वासन है, क्योंकि एक सच्चे लोकतंत्र के लिए समानता ही नहीं वरन् न्याय की सुनिश्चितता भी आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए ना केवल धर्म, लिंग जाति, इत्यादि के आधार पर राज्य द्वारा भेदभाव का निषेध करते हुए प्रतिष्ठा और अवसर की समता का उपलब्ध किया गया, बल्कि इसके साथ-साथ पिछड़ों और कमजोर वर्ग के लोगों का उत्थान करने के लिए विशेष प्रावधान करने की उपलब्ध भी किया गया, "सामाजिक न्याय में धर्म और अवसर, नस्ल, धर्म, लिंग और जातिया अन्य किसी भी असमानता सहित सभी प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन अपेक्षित है।" इसी बात को ध्यान में रखते हुए कार्य भी मानवीय स्थितियों, मातृत्व सुविधा, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता एवं उद्योगों में बालश्रम का निवारण, निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, पिछड़ी जातियों का शैक्षिक और आर्थिक उत्थान, बंधुआ मजदूरी पर प्रतिबंध सहित सामाजिक न्याय से सम्बन्धित कृन्पाणकागे कार्यक्रमों को प्रवृत्त करने का निदेश संविधान में आत्मनिहित है। आर्थिक न्याय के विचारों में समान कार्य के लिए समान वेतन का भाव निहित है। राजनीतिक न्याय से भेदभाव रहित राजनीतिक कार्यक्षेत्र अभिप्रेत है। वयस्कमताधिकार, "सांप्रदायिक आरक्षण के उन्मूलन और नस्ल, जाति, निवास, जन्मस्थान, धर्म, भेदभाव के बिना राज्योंके अधीन नियोजन प्राप्त करने के अधिकार को अंगीकारकर इसे संविधान में सुनिश्चित किया गया है।" भारत का संविधान सबसे बड़ा संविधान है। इसमें अनेक प्रकार के संवैधानिक मूल्य हैं, उनमें से प्रमुख मूल्यों में प्रमुख लोकतंत्र, समाजवाद और समानता प्रमुख मूल्य हैं।

संविधान की प्रस्तावना में एक और मूल्य "बंधुत्व" है। जो भारत की जनता को बीच आपसी भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। बंधुत्व के

अभाव में भारत एक बहुजन समाज में विभाजित हो जाता है। भारत की प्रतिष्ठा में लिखा है सभी भारतीय भेरे भाई बहन है।

संविधान में प्रमुखता लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और नागरिकों के अधिकारों को मूल कर्तव्यों से संबंधित मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

1. स्वतंत्रता : स्वतंत्रता एक ऐसी अवस्था को स्थापित करती है। जिससे मनुष्य का पूर्ण विकास हो सकता है। भारतीय संविधान में नागरिकों को समान रूप से स्वतंत्रता दी गई है। विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपार्जना की स्थापितता सुनिश्चित की है। भारतीय संविधान में स्वतंत्रताओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। अनुच्छेद (19-22) में स्वतंत्रता के अधिकार की व्यापक व्याख्या की गई है। स्वतंत्रता का यह मूल्य मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

2. न्याय : सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय स्थापित करना ही हमारे संविधान का उद्देश्य है। सामाजिक न्याय से हमारा तात्पर्य है कि समाज में असमानताओं को दूर किया जाए तथा सामाजिक समानता स्थापित की जाए, "अनुच्छेद 226, 300 तक 325, 326 के आदि में मानव अधिकारों के संरक्षण से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। अनुच्छेद 303 तथा अनुच्छेद 327 में कानून के संदर्भ में नियम बनाए हैं। राज्य के सभी नागरिकों के कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ही ऐसी सामाजिक व्यवस्था का यथासंभव संरक्षण करेगा, जिस में राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं में नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय मिले।"

3. प्रजातंत्र : भारतीय संविधान की प्रस्तावना में लोकतांत्रिक शब्द है- लोकतांत्रिक शब्द का अर्थ है कि संविधान की स्थापना एक सरकार के रूप में होती है। जिसे चुनाव के माध्यम से लोगों द्वारा निर्वाचित होकर अधिकार प्राप्त होते हैं। भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जिसका कार्य है कि सर्वोच्च लोगों के हाथ में है। लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र के लिए प्रस्तावना के रूप में प्रयोग किया जाता है।

4. समानता : समानता का अभिप्राय समाज में किसी वर्ग के खिलाफ विशेषाधिकार या भेदभाव समाप्त करने से है। संविधान की प्रस्तावना में देश के सभी लोगों के लिए स्थिति और अवसरों की समानता प्रदान करती है। संविधान देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता प्रदान करने का प्रयास करता है अनुच्छेद 14 के अनुसार, "राज्य भारत के राज्यक्षेत्र में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा।" विधि के समान संरक्षण से अर्थ है, समाज लोगों के साथ समान व्यवहार होगा, "दूसरे शब्दों में विधि द्वारा आदिदायित्व के संबंध में समान परिस्थितियों में समान व्यवहार का अधिकार है।"

5. धर्मनिरपेक्षता : भारत देश अनेक धर्म तथा जाति के लोगों से बना है। एक धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में यह पहचाना जाता है। धर्मनिरपेक्षता का आदर्श धर्म को

व्यापक आंतरिक विश्वास की वस्तु मानता है। संविधान में यह व्यवस्था कि गई है, जो मार्जनिक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य तथा इस भाग के दूसरे उपबंधों के अधीन रहते हुए सभी व्यक्तियों को स्वतंत्रता से किसी भी धर्म का पालन करने, प्रचार एवं प्रसार करने का अधिकार होगा। डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय राज्य के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, "भारतीय राज्यनेता किसी धर्म द्वारा नियंत्रित होगा और ना किसी धर्म विशेष से संबंधित होगा। हम किसी एक धर्म को वरीयता का स्थान या अद्वितीय स्तर प्रदान करना नहीं चाहते। धर्मों को समान भाव का दृष्टिकोण संविधान ने दिया है। संविधान के अधिकारों का पालन करना और उसके आदर्शों पर चलना हर नागरिक मूल कर्तव्य है। संविधान के मूल कर्तव्यों में उल्लेख है कि हर नागरिक देश की रक्षा करें राष्ट्र सेवा करें भेदभाव दूर करें, स्त्रियों के सम्मान के खिलाफ होने वाली हर प्रथा का त्याग करें। सभी को अपना धर्म मानने का अधिकार है, और संविधान यह भी कहता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवतावाद भावना का विकास करना भी नागरिकों का मूल कर्तव्य है। हमें यह मानना होगा कि सांप्रदायिकता का क्षरण आर्थिक सामाजिक गैर बराबरी का खाला और मानवीय विकास की प्रक्रिया का सहज होना, सभी संभव है जब मूल्य आधारित समाज व्यवस्था में हम विश्वास रखेंगे और सरकार उसके मुताबिक नीतियां बनाएगी। अन्यथा बेहतर नमाज कभी नहीं बन पाएगा। आज हम भारतवासियों को अभिमान है की भारतमाल डॉ. वायासाहेब आंबेडकर जी ने भारतीय संविधान जैसा एक महान ग्रंथ हमें दिया है और इस देश का सम्मान बढ़ाया। स्वतंत्रता और समानता पर आधारित भारतीय संविधान बनाया गया है। विशेषकर महिलाओं के लिए बनाए गये हैं। इस बात की जानकारी महिलाओं को अवश्य होनी चाहिए। महिला अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति सजग और आत्मनिर्भर है, तो वह संविधान के कारण ही। इसका ज्ञान महिलाओं को होना जरूरी है। इसके साथ ही पिछड़े वर्गों को आरक्षण एवं अन्य सुविधाएं देने का अधिकार केवल विधायक तथा राज्य सरकार को संविधान में प्रदान किया गया है। इन प्रकार संविधान में निहित मूल्यों का पालन करना और उसके आदर्शों पर चलना हर नागरिक का मूल कर्तव्य है। हम सब मिलकर मानवीय विकास प्रक्रिया में सहयोग दें। यह सभी संभव होगा जब हम मूल्य आधारित समाज व्यवस्था में विश्वास रखेंगे। संविधान हमारा गौरव है, अभिमान है। उन में निष्क इतना हो कहूंगी संविधान ही इस देश को चलाता है।"

संविधान ही बुगई को डराता है,

संविधान सबको समान अधिकार देता है,

संविधान सबको समान प्यार देता है